SHODH SANKALP SAMIKSHA

(An International, Peer- reviewed, Refereed Journal)

(ISSN 2583-2239)

Certificate of publication for the article titled

"नागार्जुन की कविताओं में नारी जीवन"

Authored by

KUMARI NITU

Published in

Year 2023, Volume 3, Issue 3

Dr B Kesari
Editor- in -Chief

www.shodhsankalp.in

नागार्जुन की कविताओं में नारी जीवन

कुमारी नीतु

शोध सार

नागार्जुन हिन्दी साहित्य के प्रगतिवादी धारा के प्रतिनिधि कवि है। उन्होंने कविता, उपन्यास, कहानी, निबंध, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत, बाल-साहित्य आदि विधाओं में अपनी कलम चलाई। वे हिन्दी काव्य धारा के उन प्रमुख स्तंभों में है, जिन्होंने कविता को न सिर्फ रचा बल्कि, उसको जिया भी। नागार्जुन जन-जीवन के कवि है, उनका आगमन एक क्रांतिकारी कवि के रूप में होता है। वे सच्चे अर्थों में सर्वहारा वर्ग का प्रतिनिधित्व करते है। उन्होंने आम जन की पीड़ा को महसूस किया। इसलिए उनकी कविताओं में शोषण व अन्याय के प्रति विद्रोह की भावना प्रकट हुई है। नागार्जुन जीवन और साहित्य दोनों में पीडित जन के पक्षधर रहे हैं। उस समय समाज में बाल-विवाह, परदा-प्रथा, सती प्रथा, अशिक्षा, विधवा समस्या आदि के कारण स्त्रियों की दशा दयनीय थी।

मूल शब्द नागार्जुन, स्त्रियों की समस्या, प्रगतिवादी, सर्वहारा वर्ग ।

लेखक

[1]शोध छात्रा हिन्दी विभाग, बिनोद बिहारी महतो, कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद (झारखण्ड) संपर्क Email-kumarinitu2799@gmail.com

प्रस्तावना

प्रगतिवादी काव्य यथार्थवादी काव्य है, इसलिए नागार्जुन ने काव्य में स्त्रियों की समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। प्रगतिवादी कवि स्त्रियों को भोग-विलास की वस्तु नहीं मानते है। प्रगतिवादी कवि अपने काव्य में स्त्रियों को हमेशा स्वतंत्र स्थान दिया है। शोषित पीड़ित स्त्रियों के प्रति नागार्जुन के मन में सदैव गहरी सहानुभूति रही है क्योंकि वे स्वयं एक मध्यवर्गीय परिवार में पैदा हुए थे और अपने आस-पास की स्त्रियों को कई परेशानियों व समस्याओं से जूझते देखा था। उन्होंने समाज में जो कुछ देखा या महसूस किया, उसी को अपने काव्य का विषय बनाया।

कवि नागार्जुन की दृष्टि में स्त्री भी पुरूष की भांति सृष्टि का एक अविभाज्य अंग है। उन्होंने न तो स्त्री को रूप-सौंदर्य की दृष्टि से देखा और न ही उसकी सुंदरता को जादू समझा। वस्तुतः उनके लिए स्त्री केवल एक साधारण स्त्री है। इस प्रकार उन्होंने स्त्री-पुरूष की समानता की बात कही है। अतः स्ती के प्रति उनका दृष्टिकोण संयत और स्वस्थ प्रतीत होता है।

उन्होंने अपने सम्पूर्ण काव्य में स्त्री का यथार्थ चित्रण किया है। स्त्री के प्रति सम्मान और विनम्रता का भाव उनके काव्य की प्रमुख विशेषता है। उनके काव्य में ग्रामीण एवं शहरी दोनों प्रकार की स्त्रियों का चित्रण मिलता है। साथ ही उनके काव्य में शोषित-पीड़ित और आधुनिक स्त्रियों के भी दर्शन मिलते है।

डॉ० जगन्नाथ पंडित लिखते है कि " समाज में नारी शोषित-पीड़ित मानवता का महत्वपूर्ण हिस्सा है। पुरुष प्रधान समाज ने उसका तरह-तरह से शोषण कर उसे शारीरिक और मानसिक रूप से गुलाम बनाकर उसकी सारी विद्रोही ऊर्जा हर ली है। उसमें ऐसी जड़ता भर गयी है कि वह विद्रोह करने में असक्षम है। सती-प्रथा, बाल-विवाह और पुरूषों की भोग वृत्ति नारी जीवन का विषादमय पक्ष है। चूँकि नागार्जुन काव्य पीड़ित मानवता के पक्षधर है। इसलिए दलित-शोषित नारी की समस्याओं को उठाकर नारी को एक नई दृष्टि देता है।"1

नागार्जुन के प्रथम काव्य संग्रह युगधारा में कई कविताएँ संग्रहित है, जिनमें से जया, भिक्षुणी, 'पाषाणी' और 'चंदना' आदि कविताएँ नारी जीवन से जुड़ी है। 'जया' नामक कविता में कवि ने एक गूँगी-बहरी अबोध बालिका की निरीह अवस्था और उसकी क्रियाकलापों का चित्रण किया है। कवि ने उस बालिका के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए समाज के लोगों में दिव्यांग स्त्रियों के प्रति कृतज्ञता का भाव जगाने का महत्वपूर्ण प्रयास किए है।

नागार्जुन 'भिक्षुणी' कविता एक बौद्ध भिक्षुणी की कहानी है। उसे वैराग्य में सफलता नहीं मिली, क्योंकि उसके हृदय में मातृत्व की भावना थी। कवि ने भिक्षुणी कविता में स्त्री की भावना को इस प्रकार व्यक्त किया है :-

"जीवन रस उडेलता उर के रिक्त पात्र में
भूख मातृत्व की मेरी मिटा देता
स्त्रीत्व का सुफल पाकर अनायास
धन्य में होती। "2

नागार्जुन में पाषाणी' कविता में गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या के प्रसंग के माध्यम से स्त्री की व्यथा का चित्रण किया गया है। कविता में भगवान राम और लक्ष्मण का गौतम ऋषि के आश्रम में जाना अहिल्या का उद्धार करना, राम का अहिल्या से आशीष प्राप्त करना आदि प्रसंग वर्णित है:-

वहाँ पहुँचकर देखा अद्भूत दृश्य
भू-लुठित थी नारी प्रतिमा, ओह!
ग्लानी क्षोन का वैसा करूण प्रतीक
देख सामने रह गये दंग

मुँह से फूटा नहीं एक भी बोल
वहीं धम्म से बैठ गये तत्काल। "3

अतः इस कविता में नागार्जुन ने पत्थर की अहिल्या को शाप मुक्त कर पुनः मानव रूप से परिवर्तित करने की कथा को बड़ी संवेदनशीलता के साथ अहिल्या के मनः संघर्ष को दिखाया गया है।

चंदना कविता में स्त्री की दशा का मार्मिक चित्रण है। महावीर जैनकालीन समाज में स्त्री विक्रय की घृणास्पद रीति का वर्णन है। स्त्री की दशा का वर्णन करते हुए कवि भावाकुल हो उठते है और उसके उद्धार हेतु सुधारवादी दृष्टिकोण अपनाते है। वे जैन धर्म के सामाजिक पक्ष जैसे अहिंसा, जीवों पर दया, दलितों का उद्धार आदि को सामने लाते है। इस कविता में कवि ने स्त्री को उत्पीड़न से मुक्ति दिलाने के लिए अपनी मानवीय संवेदना को इस प्रकार प्रकट किया है -

"धन्य-धन्य हो उठी चंदना उस दिन
सारे जनसमाज में
कर दिया घोषित धनवाह ने मुक्त उसे,
सौंप दिए अधिकार विशाल धन-जन के बना दी
अधिस्वामिनी।"4

इस कविता के माध्यम से कवि ने आधुनिक स्त्रियों की दशाओं का भी चित्रण किया है। आज भी स्त्री का विक्रय बंद नहीं हुआ है तथा वह अब भी पुरूषों के अधिपत्य से पूर्णतः मुक्त नहीं हो पायी है।

'तालाब की मछलियाँ' शीर्षक कविता में कवि ने नारी के शोषण एवं अत्याचार का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है। नागार्जुन नारी की इस दयनीय स्थिति को देखकर चुप नहीं रह पाते है, तभी तो वे कहते है:-

"हम भी मछली, तुम भी मछली
दोनों ही उपभोग की वस्तु है

ज्ञाता स्वाद सुधीजन, सजनी हम दोनों को
अनुपम बतलाते है।"5

इस पंक्ति पर कवि ने स्त्रियों के घुटन का तो यथार्थ चित्रण किया ही है, किन्तु प्रगतिवादी कवि होने के नाते उन्होंने स्त्री को घर की चार दिवारों के बीच बंद नहीं रखा बल्कि नारी के स्वतंत्र अस्तित्व का भी अंकन किया है।

"पत्रहीन नग्नगाछ" संग्रह की प्रथम कविता नान्हि नान्हि टा फूल है। इस कविता के माध्यम से कवि ने समाज में विधवा स्त्री की दशा का मार्मिक चित्रण किया है -

"माए अथवा मातमहीक खुनवाओल

हेतदून ई नबकी पोखरि
किंवा मोसम्मात सासुक खुनबाओल होइन। "6

यहाँ पर कवि पोखरा खुदवाने का काम एक विधवा स्त्री से कराया है। समाज में विधवा स्त्री को हेय दृष्टि से देखा जाता है, किन्तु नागार्जुन ने यहाँ विधवा स्त्री के द्वारा तालाब खुदवाकर समाज में विधवा स्त्री की मर्यादा और महत्व को बढ़ा दिया है।

प्रगतिशील कविता के युग में कविता का दृष्टिकोण बदल जाता है। कविता यथार्थ से साक्षात्कार करती हुई जीवन में सौंदर्य की खोज करती है। सामान्य जनों के प्रेम-प्रसंगों को भी नई दृष्टिकोण से देखती है। इस युग में कविता ही नहीं बल्कि जीवन में सुन्दरता के मापदण्ड भी बदले है।

प्रगतिवादी कवि नागार्जुन ने प्रेम गीत भी लिखे है, लेकिन जो मर्यादा इनके काव्य में मिलता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। सिन्दूर तिलकित भाल' कविता में कवि अपनी पत्नी की सिंदूर तिलकित भाल को याद करने के साथ-साथ, अपने देश से, वहाँ की मिट्टी से प्रेम व्यक्त करते है -

"घोर निर्जर में परिस्थिति ने दिया है डाल
"याद आता है तुम्हारा सिन्दूर तिलकित भाल।""
याद आता मुझे अपना वह तरउनी गाम

याद आती लीचियाँ वे आम
याद आते मुझे मिथिला के रुचिर भू-भाग। "8

इस प्रकार इस कविता में उनका परिवारिक प्रेम और देश-प्रेम उजागर हुआ है।

कवि नागार्जुन की कविता 'यह तुम थी' में तुम कोई और नहीं कवि की प्रिय पत्नी है और गुलर, 'कचनार भी और कोई नहीं, कवि का अपेक्षित बुढ़ापा ही है। यह कविता दाम्पत्य प्रेम की उन कविताओं में से है जिसकी मिसाल न छायावाद में मिलता है और न ही उसके बाद। प्रगतिवादी आलोचक डॉ० शिवकुमार मिश्र ने ठीक ही लिखा है कि "नागार्जुन की यह कविताएँ दाम्पत्य कविताएँ होते हुए भी पति-पत्नी का एकालाप नहीं है। रोमानी मानसिकता की कविताएँ नहीं है। कवि इनमें भी एक वृहत्तर परवेश से जुड़ा है, पूरी आत्मीयता के साथ। प्रिया या पत्नी की याद के साथ वह सबको याद करता है. ललक पड़ता है प्रिया के अलावा उस धरती का भी सामीप्य पाने के लिए अपनी उस गवई पगदंडी की चंदनवर्णी धूल माथे पर लगाने के लिए।"9

कवि की "हजार-हजार बाँहोवाली" कविता संग्रह में संकलित 'प्रत्यावर्तन' कविता भी पति-पत्नी के प्रेम संबंधों पर लिखी गई है। पूरे हिन्दी काव्य में गृहस्थ जीवन का ऐसा वर्णन अन्यत्र दुर्लभ है। नागार्जुन वर्षों तक

अपनी पत्नी और परिवार से दूर रहे। कवि कविता के माध्यम से अपनी घोर ग्लानि और पश्चाताप इस प्रकार से व्यक्त करते है :-

"आज, तेरी गोद में यह शीश रखकर
क्या बनाऊँ मैं कि जो विश्राम पाया,
व्यथित खग सम पड़ा था, कब से न जाने !
तुम अमृतमयी आ गयी सहसा जिलाने
नहीं था कोई कि जो ममता दिखाता,
नहीं था कोई जो आशा दिलाता। "10

कवि ने 'शूर्पणखा, रेणुका', 'शंकुतला' आदि कविताओं में पौराणिक संदर्भों को ध्यान में रखकर आधुनिक नारी की संवेदनाओं को उजागर किया है। इस कविता में कवि नागार्जुन राक्षसी शूर्पणखा के प्रति सहानुभूति प्रकट करते है -

'भाई ने लगाया था दुश्मन के पीछे रिझा नहीं पाई वनवासी राम को

नाक कटवा के आ गई वापस 11

कवि नागार्जुन की ये दोनों कविता विज्ञापन सुन्दरी' और 'प्लीज एक्सक्यूज मी प्यासी पथराई आँखे काव्य संग्रह में संकलित है। ये दोनों कविताएँ आधुनिक सभ्य समाज की स्त्रियों पर आधारित है। स्त्रियों में आज झूठी शान दिखाने का आडम्बर दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इसका बोध हमें इन दोनों कविताओं के माध्यम से होता । कवि ने आधुनिक सभ्य नारी के रूप को अपने काव्य में समाहित कर आज की फैशनपरस्त नारियों पर व्यंग्य किया है।

नागार्जुन ने पौराणिक कथा पर दो खण्ड काव्य लिखे है 'भस्मांकुर और भूमिजा। भस्मांकुर काव्य कवि का नारी के संबंध में परंपरागत दृष्टिकोण रहा है। भस्मांकुर की नायिका सहृदय व सुकोमल स्त्री है। पति के दुख-सुख में साथ देती है। पति के मृत्यु पर वह भी साधारण स्त्री की भांति रोती-बिलखती और भगवान को दोष देती है। जैसे -

"छलिया निकला निखिल देव समुदाय
यो ही मैं लूट गई अभागिन, हाय
मन ही मन आतंकित थी, प्राणेश

आह, अंततः फूट पड़ा दुर्दैव
विश्व विदित है सुरपति के छलछंद
स्वामिभक्ति में भाग्य पड़ गया मंद 12

नागार्जुन की भूमिजा खंडकाव्य में युगानुकूल नारी जागृति का स्वर है। भूमिजा में नारी के प्रति कवि का दृष्टिकोण बदला हुआ hat 8 1 इसमें नारी जीवन की त्रासदी के साथ नारी सुलम संवेदनाओं की अभिव्यक्ति मार्मिक रूप से हुई है। स्त्रियों प्रति सम्मान और विनम्रता का भाव इस कविता का मुख्य उद्देश्य vec 8 1 इस प्रकार कवि ने नई दृष्टि से अहिल्या और सीता के जीवन के व्यथित प्रसंगों के माध्यम से नारी चेतना को नया आयाम दिया है।

भूमिजा' काव्य कवि ने सीता के मुख से राजतंत्र की शासन व्यवस्था पर व्यंग्य किया है। सीता को एक जागृत नारी के रूप में पेश किया है, जो जन-जन की प्रतिनिधि है। वह नारी जीवन की पीडा और आक्रोश से ओत-प्रोत है, क्योंकि राम ने जब चाहा तब उसे अपना लिया और जब मर्यादा, वचन आदि का ध्यान आया, तो उसे छोड़ दिया। इसलिए सीता को रघुवंश की यह मर्यादा, आदर्श और नीति सब दिखावा लगता है। वह सोचती है कि युग बदलेगा तो लोकतंत्र आएगा और सभी को न्याय मिलेगी। समाज में पुरुष और नारी दोनों का समान अधिकार होगा। जैसे -

"सोच रही हूँ, कब होगा वह कल्प
वह मन्वंतर युगारंभ का दौर
सोच रही हूँ, परिवर्तित काल
नर-नारी में मर्यादा के बोध
सम-सम होंगे सम-सम होगा न्याय 13

इस प्रकार कवि शोषित-पीडित स्त्रियों की असहाय स्थिति को देखकर भावुक हो उठते है और अपनी कविताओं के माध्यम से समाज के प्रति आक्रोश प्रकट करते है।

निष्कर्ष

हम कह सकते है कि नागार्जुन हिन्दी कविता के प्रगतिवादी युग के सर्वश्रेष्ठ कवि है। जिन्होंने कविता को न केवल रचा बल्कि उसको जिया भी। उन्होंने अपने काव्य में स्त्रियों का यथार्थ चित्रण किया है। स्त्री के प्रति सम्मान उनकी कविता का प्रमुख उद्देश्य है। कवि ने अपनी कविताओं के माध्यम से आधुनिक स्त्रियों की दशाओं का भी चित्रण किया । आज भी स्त्री, पुरूषों के अत्याचार व शोषण का शिकार बनती है तथा वह अब भी पुरूषों के अधिपत्य से पूर्णतः मुक्त नहीं हो पायी है।

प्रगतिशील कवि नागार्जुन ने नारी जीवन से संबंधित अनेक पहलुओं को दिखाया है, और उसका युगानुरूप समाधान भी बतलाया है। उनकी कविताओं में नारी प्रेमिका, पत्नी, माता और आधुनिक स्त्री आदि के रूप में दिखाई देती । उनकी स्त्रियों के प्रति सोच बिल्कुल उदार और यथार्थपरक है, जो प्रगतिवादी विचारधारा से प्रभावित है। कवि नारी अधिकारों के समर्थक है, उनके विचार स्त्री जाति के लिए आज भी प्रेरणादायक है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. नागार्जुन का काव्य और युग अंतः संबंधों का अनुशीलन, डॉ० :- जगन्नाथ पंडित पृष्ठ क्रमांक- 96-97

2. रत्नगर्भ, नागार्जुन पृष्ठ क्रमांक-47

3. युगधारा, नागार्जुन. पृष्ठ क्रमांक-37

4. रत्नगर्भ, नागार्जुन. - पृष्ठ क्रमांक-34

5. नागार्जुन पत्रहीन नग्नगाछ, हापुड़ पृष्ठ क्रमांक-85

6. नागार्जुन पत्रहीन नग्नगाछ, हापुड़. पृष्ठ क्र.- 234-235

7. 'सिन्दूर तिलकित भाल' नागार्जुन की 'चुनी हुई रचनाएँ - 2 :- संपादक-शोभाकांत पृष्ठ क्रमांक-30

8. नागार्जुन की चुनी हुई रचनाएँ, संपादक-शोभाकांत पृष्ठ क्रमांक- 29-30

9. 'यह तुम थी नागार्जुन की चुनी रचनाएँ-2, संपादक-शोभाकांत. - पृष्ठ क्रमांक-121

10. 'हजार-हजार बाँहोवाली नागार्जुन. पृष्ठ क्रमांक-97

11. 'प्यासी पथराई आँखे' नागार्जुन. पृष्ठ क्रमांक-63

12 'भस्मांकुर' नागार्जुन - पृष्ठ क्रमांक-71-72

13. 'भूमिजा नागार्जुन. पृष्ठ क्रमांक-66